बदलती तकनीक के लिए तैयार, तेजस्विनी महिलायें

तेजस्विनी ग्रामीण महिला सशक्तिकरण परियोजना, मध्य प्रदेश शासन के महिला वित्त निगम द्वारा प्रदेश के छः जिलों में क्रमशः टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, बालाघाट, डिडौरी एवं मण्डला मे महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक सशक्तिकरण एवम् जेण्डर मुद्दों पर महिलाओं की जागरूकता बढ़ाने के लिए क्रियान्वित किया जा रहा है।

जिला टीकमगढ़ के निवाड़ी विकास खण्ड की दो लोकेशन क्रमशः तरीचरकलां एवम् निवाड़ी में भी यह कार्यक्रम विगत 5 वर्षो से सुचारू रूप से उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए चल रहा है। जिसमें 421 समूहों के माध्यम से लगभग 5500 गरीब खेतीहर महिलायें जुड़ी हुयी है।

इन्ही गरीब खेतीहर महिलाओं में से लगभग 300 महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए महिला वित्त विकास निगम द्वारा ''ऐडिंग बोमैन वेजिटैबिल कल्टीवेटर'' परियोजना के माध्यम से महिलाओं को उन्नत किस्म के बीज, खेती में पानी की व्यवस्था एवं नर्सरी आदि की सुविधा उपलब्ध करायी गयी है।

महिलाओं ने कोकोपिट एवम् प्रो–ट्रे नयी तकनीक के माध्यम से अपनी नर्सरी तैयार की जो उन्हें उनकी पारम्परिक नर्सरी से होने वाले नुकसान को लगभग 50 प्रतिशत कम कर दिया है और उन्हें एक–एक बीज की पौध तैयार करने में सफलता मिली हैं। जैसा कि महिलाओं ने बताया कि इस नयी तकनीक के माध्यम से हम लोगों को पौध रौपड़ में भी आसानी होती है साथ ही पौध की सभी जड़े सुरक्षित रहती है जिससे पैड अच्छा तैयार हो रहा है। और महिलाओं ने मिर्च, बैंगन, गोभी एवं टमाटर की खेती प्रारम्भ की है।

महिलाओं की ड्रेजरी रिडेक्शन को ध्यान में रखते हुए पौधों में होने वाले रोगों को रोकने मे दवा छिड़कने के लिए 1.5 लीटर की हैण्ड स्प्रे मशीन में उपलब्ध करायी गयी है। जिससे महिलाओं को अब पौधों पर दवा छिड़कने के लिए अपने पतियों पर आश्रित नहीं रहना पड़ता और साथ ही बढ़ी–बढ़ी मशीनें जो कंधों पर लाद कर दवा छिड़कनी पड़ती थी वह भी नहीं करनी पड़ती है, सबसे अच्छी बात यह है कि इससे प्रभावित पौधे पर दवा छिड़कने में आसानी होती है और दवा की भी बचत होती है।

पौधा रोपड़ के बाद महिलाओं को खेतों में पानी देने की समस्या सामने आने लगी साथ ही समय–बे–समय आने वाली बिजली की भी समस्या महिलाओं ने सामने रखी कई तरह के सुझाव जैसे भाईसाहब हम लोगों को डीजल पम्पों की व्यवस्था हो जाये तो बहुत अच्छा हो,

हम सभी लोगों के पास पानी की व्यवस्था हम लोग आपस में एक दूसरे के कुओं से कर लेगे और हम सभी 20 लोगों की जमीन एक ही जगह है। जब महिलाओं से कुछ नया करने की बात कही गयी तो महिलाओं ने कहा कि यदि भाई साहब जैसे ग्राम पिपरा में आप लोगों ने पीने के पानी की व्यवस्था सौर्य ऊर्जा प्लेट से करी क्या ऐसी व्यवस्था हम लोगों के खेतों पर खेती के लिए पानी की व्यवस्था नहीं हो सकती है। इस पर प्रोजेक्ट कॉर्डिनेटर ने बताया कि व्यवस्था तो सब हो सकती है लेकिन इसके लिए कुछ सर्वे करना पढ़ेगा कि कहां से ऐसी व्यवस्था हो सकती है। कितने एच.पी. के पम्प की आवश्यकता होगी कितनी लागत होगी, कुओं में कितनी गहरायी पर पानी उपलब्ध है और गर्मी के मौसम में कुओं में कितनी गहरायी पर पानी होगा।

इसके बाद कम्पनी का एक आदमी गांव में आकर सर्वे करके गया और उपरोक्त सभी तकनीकि पहलुओं पर सर्वे एवम् चर्चा करने के उपरान्त यह निकलकर आया कि एक 2 एच.पी. का पम्प आप सभी लोगों की जमीन के लिए सिंचाई के लिए उपयुक्त होगा।

महिलाओं ने खेतों में पानी लगाने के लिए आपस में सामन्जस्य बनाकर व्यवस्था करने की सहमती की और इसके बाद 2 एच.पी. सोलर का पम्प को तकनीकि रूप से क्लारो कम्पनी के कार्यकर्ताओं द्वारा लगाया गया।

अब सभी महिलायें अपने–अपने खेतों में क्रम से पानी लगाती है और इन सभी महिलाओं को सुनिश्चित बिजली मिलती है।

महिलाओं से जब उनके अनुभव पूछे गये तो महिलाओं ने बताया कि भाई साहब अब हम लोग तो आफिस की तरह काम करते है अपने – अपने घर से सुबह खाने का टिफिन लेकर आते है और शाम को घर चले जाते है। अब तो हम लोगों को रात में खेतों में पानी लगाने आने की भी आवश्यकता नहीं है।

राजेश श्रीवास्तव
लिंक अधिकारी
तेजस्विनी ग्रामीण महिला सशक्तिकरण परियोजना
सोसाइटी फार डेवलपमेंट आल्टरनेटिव्स, ताराग्राम, औरछा, टीकमगठ